संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : २६ ● २१ जुलाई, २०१५ द्वि. आषाढ़ शुक्ल पंचमी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११६

महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को पूर्ण करना हमारा धर्म –देवेन्द्रपाल वर्मा

प्रदेश के आर्यजनों के नाम प्रेषित एक सन्देश में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने कहा है कि महर्षि दयानन्द का जब प्रादुर्भाव हुआ था तब हमारा देश पराधीन था, जाति-पांति का भेद, जन-जन में विद्वेष बढ़ाकर हमें तोड रहा था। मातृशक्ति पूरी तरह से पद दलित थी, अशिक्षित बना दी गई थी। केवल घर के चूल्हे-चौके तक सीमित कर दी गई थी फलतः संतान का निर्माण शून्य था। ढोंग-पाखण्ड पुरजोर था, ढोंग पाखण्ड को ही धर्म समझा जा रहा था तथाकथित धर्म गुरू धर्म के नाम पर पाखण्ड फैलाते हमारा धन हरते और हमें निकम्मा बना रहे थे। वे प्रचारित कर रहे थे कि दुनियां में जो कुछ हो रहा है वह ईश्वर कर रहा है हम कुछ नहीं कर सकते। फलतः हम भीरू बनकर जीवन जी रहे थे। विदेशी ताकतें हमारी इस कमजोरी का लाभ धन लोभी पण्डितों के माध्यम से अनर्गल कथानक गढ़वाकर हमारे पूर्वजों को लांछित करा रहे थे हम बुद्धिशून्य बन कर उनके प्रांजल चरित्र पर लगे लांछनों को सही मानकर उसी के प्रचार में मस्त रह रहे थे। योगेश्वर कृष्ण जैसे जितेन्द्रिय एक पत्नी व्रतधारी महापुरूष को हम उन सर्वथा अनर्गल कथन को हम गा-गाकर अपने को धर्म परायण मान रहे हैं।

पहले यवन आक्रान्ताओं ने फिर व्यापारी बन कर आये धूर्त अंग्रेजों ने हमारा वैभव लूटा हमें धनहीन व गौरव हीन बनाया। हमारी वैदिक शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से बदल डाला हमारा पूर्व इतिहास नष्ट कर डाला हमें जंगली गंवार कहा। हमें विदेशी कहकर हमारे अन्दर ही लड़ाई मचा दी। हमें शिक्षा वह देनी शुरू की जिसे पढ़कर हम केवल रोजी रोटी के लिए ही जीवन भर चिन्तित रहें।

हमारे सौभाग्य से उस विकराल काल में महर्षि स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने प्रज्ञा चक्षु गुरूवर विरजानन्द के चरणों में बैठकर वेदाध्ययन किया। देश को बिगाड़ने के दोषों को जाना और दीक्षान्त के बाद गुरुवर ने गुरु दक्षिणा में उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए भाग लिया। महर्षि ने कार्यक्षेत्र में उतर कर देश की पराधीनता के मूल को बड़ी गहराई से जाना नारी उत्पीड़न, अशिक्षा जाति पांति के भेद को उसके मूल में पाया और सभी संकटों से देश को मुक्त कराने का संकल्प लेकर आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की। उन्होंने कहा यह आन्दोलन ही हमें विजय दिलाएगा। आन्दोलन तीव्र गति से चला आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज के सदस्यों ने सर्वात्मना योगदान देकर देश को स्वतंत्र कराने का सौभाग्य प्राप्त किया। धूर्त अंग्रेजों ने जाते जाते भी हमारे देश के दो टुकड़े करा दिये, ताकि भारत में कभी भी सुख चैन न आने पाये। हमारा देश भारत व पाकिस्तान दो टुकड़ों में बंट गया। सत्ता में जो पदासीन हुये देश की भौतिक समृद्धि में अपना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित कर दिया हमें सदा पराधीन रखने वाली नैतिकता विहीन शिक्षा को बदलने पर ध्यान ही नहीं दिया। फलतः आज चारों ओर अनाचार, भ्रष्टाचार नारी उत्पीड़न, भ्रूण हत्या, जाति पाति का भेद, अल्प संख्यक व बहुसंख्यक का भेद देश को पूरी तरह से विनाश की ओर ले जा रहे हैं विदेशी हमारे देश को पुनः पराधीन बनाने के षड्यंत्र रच रहे हैं।

आजादी के बाद आर्य समाज आन्दोलन में क्रमशः शिथिलता आती जा रही है हम संगठन के पदों पर आसीन होकर हवन-सत्संग सम्मेलन करने तक अपना दायित्व मानते जा रहे हैं। इसीलिए सभी विकार महर्षि दयानन्द के काल से ही ज्यादा उग्र रूप में सारे देश में फैलते जा रहे हैं हमें उन विकारों को विनष्ट करने का संकल्प लेना है हम सभी आर्यो पर महर्षि के उपकारों का बहुत बड़ा ऋण है उसे चुका पाना तो सम्भव नहीं परन्तु प्रयत्न करके राष्ट्र को उन्नत बना सकने में समर्थ हो सकते हैं।

प्रधान जी ने सन्देश में आगे कहा कि हम सभी आर्य बड़ी गहराई से देश की दुरवस्था को देखें और उससे राष्ट्र को मुक्त बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रगति से चलाने का संकल्प लें-विगत दिनों एक मास तक भ्रूण हत्या, नारी उत्पीड़न आदि बुराइयों को समाप्त करने के लिए उत्तरांचल से होशंगाबाद तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में जन चेतना रैली निकाली थी जिसका मैं सम्पूर्ण यात्रा का गवाह हूँ-कि जनता ने उसे मनोयोग से देखा और सुना उनपर उसका गम्भीर प्रभाव पड़ा अगले दिनों में भी ऐसी ही जन चेतना यात्राओं का संचालन किया जायेगा। आन्दोलन को पूर्ण सफल बनाने के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थो को परस्पर द्वेष भाव को पूरी तरह से तिलांजलि देकर उठ खड़े हों। निश्चय ही हमारा सर्वात्मना निस्पृह योगदान आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति प्रदान करेगा। हम सजग व सचेत रहते हुये सभी प्रकार की बुराईयों पर विजय प्राप्त करेंगे और हमारा राष्ट्र निश्चय ही विश्वगुरू पद को पुनः प्राप्त करने में सफल होगा।

वेदामृतम्

स धा वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः।
सोमो हिनोति मर्त्यम।।

(सः) वह (वीरः) वीर (घ) निश्चय ही (न) नही (रिष्यति) क्षतिग्रस्त और विनष्ट होता है, (य) जिस (मर्त्य) मर्त्य को, मरणधर्मा को (इन्द्रः) इन्द्र (ब्रह्मणस्पतिः) ब्रह्मणस्पति और (सोमः) सोम (हिनोति) बढ़ाता है।

क्या तुम वीर हो और तुम्हें यह विश्वास है कि जगत् की बीहड़ पगडंडी पर चलते हुए तुम किसी शत्रु से क्षतिग्रस्त और विनष्ट नहीं होगे?पर कहीं ऐसा तो नहीं है कि समय आने पर तुम्हारा यह विश्वास असत्य सिद्ध हो और तुम हृदय में वेदना लिए हुए सिसको चिल्लाओ शोर मचाओ कि अरे मैं तो मारा गया, मेरा तो सब कुछ लुट गया, मैं तो क्षत विक्षत हो गया। यदि तनिक भी तुम्हें अपने ऊपर सन्देह है जरा भी मन कहता है कि विपदा आने पर सुरक्षित बच निकलना कठिन है, अचलायमान होकर दृढ़ता के साथ अविनष्ट बने रहना दुष्कर है तो आओ कान खोलकर अविनाश का वेदोक्त कितना महान शब्द है ! कितना कुछ इसके अन्दर छिपा हुआ है। आत्मिक अविनाश भौतिक अविनाश, वैयक्तिक अविनाश, राष्ट्रीय अविनाशजिस पथ पर मनुष्य विनष्ट होता है चरित्र से विनष्ट होता है, धर्म से विनष्ट होता है, सम्पत्ति से विनष्ट होता है, राष्ट्रीयता से विनष्ट होता है। उस सकल विनाश से बचना कितनी बड़ी उपलब्धि है?वह प्राप्त होती हैउस मर्त्य को जिसे इन्द्र ब्रह्मणस्पति और सोम बढ़ाते है। इन्द्र है अग्रगामिता का शौर्य का, अविचलता का, रिपु-विदाहरण का और ..... का प्रतिनिधि। वैदिक वर्णन इन्द्र की इन विशेषताओं से भरे पड़े हैं। हम अपने अन्दर प्रतिबिम्वित कर सकते हैं। सोम है शान्ति, रसमयता, समस्वरता, सत्प्रेरणा आदि का प्रतिनिधि। अतः वैदिक सोम से इन विशेषताओं को हम प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार ये तीनों देव परमेश्वरी सत्ता के ये तीनों रूप जब हमारी वृद्धि एवं समुन्नति में संलग्न हो जायेंगे तब संसार की कोई शक्ति हमें नीचा नहीं दिखा सकेगी, क्षतिग्रस्त या विनष्ट नहीं कर सकेगी। अन्यथा मनुष्य तो मर्त्य है मरणधर्मा है, इन देवों से यदि वह शक्ति और संदेश नहीं लेगा तो कोई भी वाह्य या आन्तरिक रिपु उसे धर दबोचेगा और प्रहारों से जर्जर कर विनष्ट कर डालेगा।

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक ०६.०८.२०१५ दिन-रविवार तदनु श्रावण कृष्ण दशमी २०७२ को प्रातः ११ बजे से सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में आर्य समाज शास्त्री नगर, डी-ब्लाक, मेरठ में होना सुनिश्चित है।

सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य समय से उपस्थित होकर अन्तरंगाधिवेशन को सफल बनायें। अन्तरंग सभा की विषय सूची (एजेण्डा) पृथक डाक से सभी को भेजी जा रही है।

नोट– सभी सदस्यगण मेरठ रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेशन से तेजगढ़ी चौराहे पर उतर कर आर्य समाज डी-ब्लाक शास्त्री नगर, मेरठ पहुंचें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
मो. ०९८३७४०२१९२

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

आर्य ही राष्ट्र को सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा सकते हैं।

सृष्टि की संरचना परमात्मा ने जीवात्माओं के कल्याण के लिए की। उसने सभी आत्माओं के लिए पूर्व कृत कर्मो के आधार पर शरीरों का विभाजन किया। जीवात्माओं को मुख्यतः दो योनियों में बांटा। कर्म चोनि और भोग योनि। पूर्व जन्म के कुछ अच्छे कुछ बुरे कर्मो के आधार पर मानव शरीर दिया और उसे कर्म करने की स्वतंत्रता दी। परन्तु कर्म का फल देना अपने हाथ में रखा। निकृष्ट कर्मी आत्माओं को पशु पक्षी, कीट पतंग आदि योनि में अपने पूर्व कृत कर्मो के भोग के लिए डाला। उनके लिए सृष्टि के हितार्थ पृथक् पृथक कर्म बांधे वे अपने जीवन में वे ही कर्म करते हैं अपने कर्म का परिवर्तन नहीं कर सकते।

मनुष्य को कर्म करने की स्वतंत्रता दी, कर्मो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान दिया तथा हमें माता-पिता की गोद और गुरुजनों का सान्निध्य दिया। माता के गर्भ में शिशु का शरीर उसके रक्त से बनता और स्वभाव तथा चरित्र से निर्मित होता है। गर्भ में शरीर ५-६ मास में प्रायः पूर्ण हो जाता है। सातवे मास में उस शरीर में परमात्मा मन और बुद्धि की सथापना करता है। दसवें मास शरीर गर्भ से बाहर आता है और माता अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उसका पालन करती है और पालन समय में माता के गुण कर्म स्वभाव उसके अन्दर समाहित होते हैं। ५ वर्ष का बालक स्वयं अपने कार्य करने में समर्थ होता है तब उसको सुशिक्षित बनाने के लिए पिता ७ वर्ष की उम्र तक उसे विद्यालय में जाकर शिक्षा प्राप्ति के लिए सक्षम बनाता था और बालक बालिका का उपनयन संस्कार घर में करके अध्ययन के लिए योग्य गुरु को सौंप देता था गुरू उसे विद्वान बनाने के लिए स्वीकार करते हुए पहला उपदेश देता था यानि यानि अनवद्यानि कर्माणि तानित्वयोषास्यानि नो इतराणि-मेरे अन्दर जो सद्‌गुण हैं उन्हें अपने जीवन में धारण करना अगर कुछ गलत हो तो उसे कतई मन ग्रहण करना-फिर गुरू आश्रम में लेकर ब्रह्मचर्य का पालन, अनुशासन बद्ध जीवन जीने की कला तथा मानव जीवन निर्माण के लिए विविध विषयों की शिक्षा उन्हें प्रदान करते थे।

परमात्मा ने वेद ज्ञान के माध्यम से मानव शरीर को २ वर्गो में विभाजित किया एक वर्ग को आर्य तथा दूसरे को अनार्य कहा। उत्तमगुण कर्मस्वभाव से जीव मात्र के हित में जीवन जीनें वाले आर्य तथा इसके विरूद्ध आचरण वाले को अनार्य संज्ञा दी गयी। सृष्टि को पूर्ण समृद्ध बनाने के लिए गुरूजन बालक व बालिका के अन्दर सम्पूर्ण ज्ञान भरने का प्रयत्न करते थे अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जो जिस, जो शिष्य दिशा में प्रगति करने में प्रवृत्त होते थे इसें उसी ओर ज्ञान समृद्ध बनाने में संलग्न होते थे। पढ़ाई समाप्ति पर उनकी योग्यता के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन उपवर्गो में बांट कर समाज को सौंप देते थे जिसे जाति नाम दिया गया था। वेद ज्ञान से पूर्ण पारंगत उक्त ज्ञान को जन-जन में बांटने की रुचि वाले को ब्राह्मण, छात्र धर्म, राष्ट्र संरक्षण की कला में पारंगत को क्षत्रिय तथा व्यापार की विधा में निपुण देश को समृद्ध बनाने में रूचि वाले को वैश्य तथा जो किसी भी दिशा में पारंगत न हो सका उसे तीनो वर्षो के सहायक के रूप में रहने के लिए शूद्र कहा।

महाभारत काल तक यह विधा पूर्ण रूपेण चालू रही इसलिए हमारा देश सर्वोच्च शिखर पर रहा। महाभारत काल से इसमें गिरावट आने लगी फलतःदेश टूटने लगा। विदेशियों ने हमारे धन वैभव को लूटने के लिए हमारी कमियों को देखकर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। हमें पराधीन बना डाला। अंग्रेजों ने व्यपारी बन कर यहां आकर हमारे देश को सर्वथा गुलाम बना डाला। हमें सदा अपंग गुलाम रखने के लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से बदल डाली। सुनियोजित षड्‌यन्त्र के तहत लार्डमैकाले ने वह शिक्षा व्यवस्था बनाई जिसे पढ़कर बालक बालिका सम्पूर्ण जीवन रोजी रोटी की व्यवस्था में ही लगा रहे आत्म चिन्तन देश चिन्तन का उसे अवसर ही न मिले। हम पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ गये मातृ शक्ति पद दलित हो गयी ढोंग पाखण्ड, जन्मगत जाति का प्रचलन हमें नष्ट कर रहा था। ऐसे दुर्दिनों में हमारे देश में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने देश की पराधीनता के सभी पहलुओं पर विचार किया और इसके मूल में पाया कि मातृ शक्ति पूरी तरह से पददलित और अशिक्षित है तथा कथित धर्म गुरू ने विविध मतान्तर चलाकर धनार्जन में व्यस्त हैं। जनता के अन्दर भीरुता भर रहे हैं। हम जो कुछ करते हैं वह सब भगवान ही कराता है ऐसा कहकर हमें कर्तव्य विमुख बना रहे हैं उन्होंने हमें सभी तरह से सुखी समृद्ध बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की और कहा कि यह कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं है ब्रह्मा से जैमिनि ऋषि पर्यन्त प्रतिपादित वैदिक धर्म में वर्तमान में आई बुराइयों को दूर करके वैदिक धर्म की संरक्षा का एक आन्दोलन है। उन्होंने जन्मगत जाति का वैज्ञानिक ढंग से विरोध करके कर्मणा जाति व्यवस्था का सन्देश दिया। नारी को पूर्ण सुशिक्षित बनाकर उसे मातृ शक्ति पद पर अधिष्ठापित करने का आह्वान किया। ढोंग पाखण्ड समाज को तोड़ रहा है इसके स्थान पर वैदिक धर्म की संस्थापना पर बल दिया। उनका सन्देश रंग लाया। आर्य समाज आन्दोलन तेज हुआ। ऋषि के बाद २ पीढ़ियों तक यह आर्य समाज आन्दोलन पूर्ण गति से चला देश के स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज के ८० प्रतिशत् से अधिक लोगों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। आजादी के बाद हमने अपने आन्दोलन को समाप्त माना। फलतः सत्ता में आये लोगों ने देश की भौतिक समृद्धि पर अपना ध्यान केन्द्रित कर लिया। शिक्षा व्यवस्था नहीं बदलने से छात्रों में नैतिक चरित्र का उत्तरोत्तर ह्रास होने लगा और आज देश सभी तरह की बुराइयों से नष्ट हो रहा है नारी शिक्षित है परन्तु सन्तान निर्मात्री नहीं बन रही भोगवादी जीवन में स्व कल्याण समझती है। राजनीतिक नेता सत्ता में अपना वर्चस्व बनाने या बनाये रखने के लिए जातिवाद को भरपूर बढ़ावा दे रहे हैं। ऊँचनीच का विभ्रम फैला कर पार्टियां अपना वोट बैंक मजबूत बनाने में लगी हैं। ऐसे विकरालकाल में आज आर्य समाज आन्दोलन को अत्यन्त तीव्र गति से चलाने की आवश्यकता है। महर्षि ने आर्य समाज के निर्माण के लिए आर्य समाज के दस नियम बनाये हैं और उन नियमों को अपने जीवन में अक्षरशः उतारने वालों को आर्य कहा तथा आन्दोलन को तीव्र करने के लिए उन्हें आर्य सभासद कहकर आर्य समाज की संगठन शक्ति में भाग लेने का अधिकर दिया है। परन्तु आज इसका अभाव बढ़ता जा रहा है आर्य सभासद बनने का परीक्षण समाप्त प्राय है फलतः आन्दोलन गति नहीं पकड़ रहा। परन्तु देश के सुनिर्माण के लिए आर्य ही सक्षम हो सकता है अनार्य नहीं अतः हम सभी देश हित में गहराई से आत्म चिन्तन करें और सच्चा आर्य बनने का प्रयत्न करें। निश्चय ही ऐसा करने से परिवर्तन आयेगा। आर्य समाज के अधिकारियों का दायित्व है कि वे किसी को आर्य सभासद बनाने से पहले नियमों के अनुरूप प्रार्थी के चरित्र का आकलन करें नियमों का अक्षरशः पालन करने वाले को ही आर्य सभासद बनायें। ऐसा प्रयत्न निश्चय ही रंग लायेगा। हम सच्चे आर्य बनेंगे, सच्चे आर्य बनकर राष्ट्र को सर्वोच्च शिखर पर ले जाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तेज करने को कृत संकल्प होंगे। निश्चय ही हमारा यह प्रयत्न सफल होगा। देश बुराइयों से रहित सर्वतंत्र सुखी समृद्ध राष्ट्र बनेगा और विश्व गुरू बनने का अधिकार प्राप्त करेगा।

-सम्पादक

वैदिक विज्ञान की मान्यताएं - 4

-कृपाल सिंह वर्मा

(२६) ब्राह्मण ग्रन्थ वेद की वैज्ञानिक व्याख्या है। इसी प्रकार उपनिषद आध्यात्मिक तथा स्मृति ग्रन्थ वेद की सामाजिक व्याख्याएं हैं। शतपथ ब्रह्मण यजुर्वेद का सबसे प्राचीन वैज्ञानिक भाष्य है। एक वर्ष में ऋतुओं का चक्र पूरा हो जाता है, इसे ही वैदिक विज्ञान की भाषा में संवत्सर कहते है। छः ऋतुएं हैं। वैदिक विज्ञान की भाषा में इन्हें पितर कहते है क्योंकि अनेक प्रकार के वनस्पतियों तथा प्राणियों को ये ही जन्म देती है। सूर्य से आने वाली अग्नि को आदित्य कहते हैं। यह छः ऋतुओं में विभक्त हो जाता है। प्रत्येक ऋतु के अपने विशेष गुण-धर्म होते है।

इसी प्रकार आदित्य १२ मास में विभक्त हो जाता है। इन १२ भागों में से प्रत्येक को कपाल कहते है तथा पूरे वर्ष में आदित्य के स्वरूप को पुरोडाश कहते है। इसलिए आदित्य का पुरोडाश बारह कपाल का होता है। ये बारह आदित्य द्यू-लोक के देवता कहे जाते हैं।

इसी प्रकार वायु जो अन्तरिक्ष लोक का देवता है इसका पुरोडाश ग्यारह कपाल का होता है। दस प्राण तथा ग्यारहवां आत्मा। अग्नि का पुरोडाश आठ कपाल का होता है क्योंकि वसु आठ होते हैं।

इसलिए वैदिक विज्ञान में ३३ दिव्यशक्तियां होती है। आठ वसु, ग्यारह रुद्र तथा बारह आदित्य, इन्द्र तथा प्रजापति, ये ३३ देवता है। भूलोक के देवताओं को वसु, अन्तरिक्ष लोक के देवताओं को रूद्र तथा द्यूलोक के देवताओं को आदित्य कहते हैं। वैदिक विज्ञान में प्राकृतिक शक्तियों को देवता कहते है।

(२७) वसु, रुद्र, आदित्य, पुरोडाश, कपाल, देवता, पितर, संवत्सर ये सब वैदिक विज्ञान के पारिभाषिक शब्द है। इनके स्वरूप को जाने बिना वैदिक विज्ञान को नहीं समझ सकते।

(२८) वैदिक विज्ञान का एक महत्वपूर्ण शब्द है द्रोणकलश। इसे अब कमण्डल कहते है जिसे सन्यासी लोग रखते हैं। यह अण्डाकार होता है। पृथ्वी सूर्य के चारो ओर एक अण्डाकार पथ में चक्कर काटती है। इसलिए पृथ्वी कभी सूर्य के निकट तथा कभी दूर चली जाती है। इसी से ऋतुएं बदलती हैं। इसलिए शतपथ ब्राह्मण में कहा कि द्रोणकलश से ऋतुएं बदलती है।

(२६) शतपथ ब्राह्मण काण्ड ५, अध्याय १, ब्रह्मण ५ की प्रथम कण्डिका में कहा है -

''जब दौड़ते हैं तो पृथ्वी लोक को जीत लेते हैं। जब ब्रह्मा नाभि तक उठे हुए चक्र पर चढ़कर सामगान करता है तो अन्तरिक्ष लोक को जीतता है। जब यूप को खड़ा करता है तो देवलोक को जीतता है। इसलिए तीन प्रकार का कृत्य किया जाता है।''

''रथ अर्थात बस, कार आदि से दौड़कर पृथ्वी को जीतते है। ब्रह्म चक्र से अन्तरिक्ष को जीतते हैं। 'ब्रह्म' वैदिक विज्ञान में वायु को कहते है। ब्रह्म चक्र का अर्थ है वायु काटने वाला चक्र जिसे Expeller कहते हैं जो वायुयान के अग्रभाग में लगा रहता है। जब ये तेजी से घूमता है तो एक प्रकार की ध्वनि करता है जिसे सामगान कहते हैं। ये चक्र वहीं तक कार्य करता हैं जहां तक वायुमण्डल में वायु विद्यमान होती है। इससे ऊपर, यूप (Rocket) कार्य करता है। क्योंकि वह पीछे को धुवां धकेलने के कारण आगे को दौड़ता है। उसे वायुमण्डल की आवश्यकता नहीं होती।

द्यू लोक ब्रह्माण्ड का वो भाग होता है जो हमेशा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित रहता है वहां वायुमण्डल तहीं होता।

''दौड़कर पृथ्वी को जीतते है। ब्रह्म चक्र (वायु काटने वाला पंखा) से अन्तरिक्ष लोक को जीतते है तथा यूप (Rocket) से द्यू लोक को जीतते है'' शतपथ ब्राह्मण का यह कथन पूर्ण रूप से वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

(३०) वेदी-वैदिक विज्ञान में वेदी शब्द का प्रयोग होता है। वेदी क्या है ? हमारा शरीर एक वेदी है, इसमें अन्न रूपी आहुति डालते हैं तो जीवन चलता रहता है। कार का इंजिन एक वेदी है। इसमें पैट्रोल की आहुति देते रहने से इंजिन चलता रहता है। वेदी अनेक प्रकार की होती हैं तथा हवि (जिसकी आहुति दी जाती है) अनेक प्रकार की होती है। ये सब Engineering का विषय है।

(३१) यज्ञ-वैदिक विज्ञान में यज्ञ शब्द का उपयोग बार-बार होता है। यज्ञ क्या हैं ? ऋग्वेद में भूलोक पर पाये जाने वाली अग्नि आदि शक्तियों का विज्ञान है। यजुर्वेद में अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली शक्ति विद्युत आदि का विज्ञान है। सामवेद में द्यू लोक में पायी जाने वाली शक्ति सूर्य का विज्ञान है। इन शक्तियों का उपयोग जीवन को सुखी बनाने के लिए यन्त्र आदि का विकास करना ही यज्ञ है। यज्ञ करना जीवन का श्रेष्ठतम् कार्य है।

(३२) शतपथ ब्राह्मण का प्रथम काण्ड हविर्यज्ञ है। हवि उस पदार्थ को कहते है जिसकी आहुति दी जाती है। हवि एक प्रकार का ईधन है। वैदिक विज्ञान की भाषा में इसे सोम कहते है। सोम अग्नि उत्पादक पदार्थ को कहते हैं।

(३३) विष्णु-भूलोक में विष्णु अग्नि के रूप में, अन्तरिक्ष लोक में विद्युत के रूप में तथा द्यू लोक में सूर्य के रूप में रहता है। ये तीनों अग्नि के रूप है। इनको समवेत रूप से विष्णु कहते हैं।

(३४) सूर्य ताप एवं प्रकाश देकर प्रत्येक वस्तु तथा प्राणी को प्रेरित करता है। इसलिए वैदिक विज्ञान की भाषा में सूर्य को सविता कहते हैं।

(३५) ऋग्वेद में भूलोक का विज्ञान है। इसके वैज्ञानिक को होता कहते हैं। यजुर्वेद में अन्तरिक्ष लाक का विज्ञान है इसके वैज्ञानिक को अध्वर्यु कहते है। सामवेद में द्यूलोक का विज्ञान है, इसके वैज्ञानिक को उद्‌गाता कहते है। चारों वेदों के विज्ञान को जानने को ब्रह्म कहते हैं।

२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा,
मेरठ

धरोहर.....

अद्वितीय सौम्यता के धनी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

फरवरी, १९६६ की बात है गुरूकुल झज्जर रोहतक (हरयाणा) के स्वर्ण जयन्ती का पावन पर्व था मानो कुम्भ का मेला था स्वामी ओमानन्द जी महाराज (आचार्य भगवान् देव) के निमन्त्रण पर पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ वेदों के मनीषी संस्थापक गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर भी उसमें पूरे गुरूकुल सहित उपस्थित हुए थे मैं भी पूज्य स्वामी जी की सेवा में होने से यह सौभाग्य प्राप्त कर सका स्वामी जी के आशीर्वाद से इस महाकुम्भ में आर्य समाज के लगभग सभी महारथी देखने एवं सुनने का सौभाग्य मिला गुरूकुल के एक ओर खेतों में टैण्ट तम्बू लगे हुए थे जिनमें आवास की व्यवस्था थी कार्यक्रम चलते लोग बड़ी श्रद्धा से सुनते थे बड़ा उत्साह था जो मेरे जीवन को एवं मेरे जैसे हजारों बालकों एवं युवकों के लिए प्रेरणा श्रोत बनें वह कार्यक्रम था ब्र० इन्द्रदेव जी (स्वामी इन्द्रवेश) का आकर्षक चमत्कार व्यायाम प्रदर्शन गले से प्राणायाम द्वारा सरिया मोड़ना आँख से मोड़ना जंजीर तोड़ना एवं छाती पर पत्थर तुड़वाना लोहे की फाल को गर्म करके चटवाना आदि-आदि चमत्कारिक कार्यक्रम थे मैं छोटा सा ही बालक था लेकिन आज भी सारा दृश्य ऐसा लग रहा है कि मानो अभी कल परसों की ही घटना हो बस घटना क्या थी हजारों की संख्या में बस एक ही चर्चा का विषय पूरे कार्यक्रम में रहा कि भाई ब्र० इन्द्रदेव में कोई अलौकिक शक्ति है कोई कहता कि जादू है कोई कहता कि मंत्रों की शक्ति का चमत्कार है तरह-तरह की चर्चायें लेकर लोग घरों को वापस आकर उनके प्रचार में लग गए और इसी जयन्ती से ब्र० इन्द्रदेव जी के मानोभाग्य जग गए सितारा बुलन्दी की ओर भागने लगा और स्वामी जी के मन में नई दुनियां नए-नए सपने साकार करने की योजना बनने लगी। जो ब्रह्मचारी अभी कुछ दिन पूर्व अपने परिवार एवं ग्राम से ममता मोह का परित्याग कर सांसारिक बन्धनों से छूटकर भक्ति एवं साधना समाधि के मार्ग के पथिक बन गए थे वे आज बैठकर अपनी मित्रमण्डली में समाज सुधार के कार्यक्रम बना रहे हैं वे राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने के लिए एक राजनैतिक संगठन की योजना तैयार कर रहे हैं लोग स्वतः आकर प्रेरित कर रहें हैं स्वामी जी मैदान साफ हो गया है आओं राष्ट्र की बागडोर सम्भालों पता नहीं क्यों तरह-तरह की कल्पनाओं में समय व्यतीत होता है स्वामी ओमानन्द जी के कार्यभार के हल्का कर दिया है ब्र० बलदेव जी ने अतः सोचा मैं क्यों न समाज सेवा से राष्ट्रसेवा के दायित्व को पूरा कर लूँ प्रो० श्यामराव जी कलकत्ता वाले (स्वामी अग्निवेश) भी संयोग से प्रभु ने इधर भेज दिये ''चाह को मिल जाती है राह'' श्री धर्मपाल सिंह जी जूवाँ वाले क्षेत्र के युवक आने वाले चुनाव में ''आर्य राष्ट्र बनावेगें'' युवकों की सेना बनाक्रर लालकिले पर ओ३म् का झण्डा फहराने के लिए कुरूक्षेत्र के मैदान से महाभारत की सेना सजाकर आर्यसेना चल पड़ी हाथ में मशाल लिए एक हाथ में ओ३म् का झण्डा बस संकल्प यही था कि '' आर्य राष्ट्र बनायेंगे'' दयानन्द के दीवाने मस्ती भरे गीत गाकर मार्ग में युवकों को प्रेरणा देते और जनता को जागरूक करते कि अब समय आ गया है देश करवट लेना और दयानन्द के सपने साकार करेगा पत्र पत्रिकाओं में मुख्य समाचार बन गए सुर्खियों के समाचारों ने गुरूकुल में रहकर साधना करने वाले ब्र० इन्द्रदेव जी को राष्ट्रीय स्वरूप का नेता बना दिया जिधर भी जायें चर्चा केवल आर्यसभा की स्थापना युवकों का संगठन आर्यसेना के बलबले चर्चायें आर्य राष्ट्र की होने लगी लेकिन चौ० चरणसिंह पूर्व प्रधानमंत्री कहा करते थे कि राजनीति की कीचड़ अच्छे श्रेष्ठ लोगों को भी बदनाम कर देती है और आर्य समाज पतित व्यक्तियों को भी श्रेष्ठ बना देता है बस कुछ ऐसा ही लगा ये दयानन्द के सिपाही ही छलछद्म से रहित राजनीति के दांव पेंच को अच्छी तरह समझ सकें अथवा ये कहा जाये तो ज्यादा अच्छा है कि इन आर्यवीरों ने उस मार्ग का अवलम्बन नहीं किया जिसका आज के राजनेता करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते है यथाराजा तथा प्रजा का आदर्श बनाना चाहतें थे लेकिन यथा प्रजा तथा राजा के सामने वह सफल नही हो सका, स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज में आई हुई निराशा को दूर कर एक नवीन चेतना प्रदान करने के लिए सक्रिय होकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष पद हेतु चुनाव लड़ने का मन बना लिया एक ओर स्वामी रामेश्वरानन्द जी सांसद गुरूकुल घरोण्डा पुराने अनुभवी नेता एवं विद्वान तथा इधर ब्र० इन्द्रवेश जी आचार्य गुरूकुल झंज्जर संघर्ष से पूर्व देखने में लग रहा था कि महाभारत का युद्ध कुरूक्षेत्र के मैदान में होने जा रहा है यह भी महाभारत सम्भवतया अम्बाला में हुआ दोनों ओर से सेनाये सजी खड़ी है लड़ाई प्रारम्भ होने से पूर्व महारथी अर्जुन ने अपने सभी गुरूजनों से आशीर्वाद लेकर ''विजयीभव'' को जैसे सार्थक किया था उसी प्रकार स्वामी इन्द्रवेश जी ने अर्जुन महारथी बनकर अपने गुरुतुल्य गुरू दोणाचार्य जी (स्वामी रामेश्वरनन्द)से आशीर्वाद लिया यह इनकी विनम्रता शालीनता का परिचायक था और स्वामी जी ने शायद मन ही मन आशीर्वाद देकर कहा होगा कि जाओं और युवाशक्ति के द्वारा आर्य समाज का नवनिर्माण करो स्वामी जी अध्यक्ष पर विजयी हुए और पूरे प्रदेश में एक क्रान्ति की लहर दौड़ गई युवाशक्ति ने आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प ही नहीं लिया अमितु हरयाणा पंजाब में आर्य केन्द्रीय युवक परिषद गुरूकुल आर्यवीर दल आदि संस्थायें आगे बढ़ी गुरूकुल काँगड़ी में भी सुधारात्मक कदम उठाये गए आपका सर्व व्यापक प्रभाव हुआ। जिसका परिणाम आपको रोहतक लोकसभा क्षेत्र से सांसद लोगों ने भारी बहुमत से बनाया और हरयाणा का नाम पूरे देश में गौरवान्वित हुआ आपनें कार्य करने की क्षमता और ऋषिवर एवं आर्यसमाज के प्रतिकितना समर्पण भाव था में केवल एक उदाहरण से ही आपको स्पष्ट करना चाहूँगा। आर्य गुरूकुल सिरसामंज मैनपुरी (उ०प्र०) में आपने कुछ काल तक रहकर अष्टाधायी महाभाष्य काशिका का गूढ़ अध्ययन पूज्य स्वामी महात्मा देवस्वामी जी आचार्य के चरणों में बैठकर किया है वहां पर कोई जयन्ती कार्यक्रम था मैं भी २ वर्ष वहाँ पढ़ा हूँ अतः मैं भी वहाँ स्नातक मण्डल के मंत्री होने के नाते से उपस्थित था स्वामी जी सांसद बनने के बाद वहाँ गए निरमिमानी व्यक्तित्व ने रात्रि में जब अपना परिचय दिया कि मेरे से संसद में जब परिचय पूछा गया तो मैंने अन्य परिचय देने के बाद कहा कि मेरे में जो कुछ भी योग्यता है वह आचार्य देव स्वामी जी का आशीर्वाद एवं गुरूकुल सिरसागंज में पढ़ने का ही सुपरिणाम है। वहाँ इस बात पर जनता में इतना उत्साह पैदा हुआ कि बहुत देर तक तालियों की ध्वनि पण्डाल में गूंजती रही और स्वामी इन्द्रवेश जिन्दाबाद - जिन्दाबाद के नारे से लग रहा था कि आचार्य देवस्वामी जी की तपस्या तो एक प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द की तरह एक शिष्य स्वामी दयानन्द जी की तरह पूरी हुई थी इसी प्रकार स्वामी इन्द्रवेश को पाकर लोग प्रसन्नता में अपने उत्साह का वर्द्धन कर रहे थे और यह कहते सुना गया कि अब कोई स्नातक बन या न बने लेकिन सिरसागंज गुरूकुल तो एक इन्द्रवेश को पाकर ही धन्य हो गया है वातावरण बहुत भावुक था। लगता है अभी हम यहीं पर बैठे चर्चा कर रहें हैं उन दिनों स्वामी इन्द्रवेश जी को मैंने निकटता से देखा वैसे मैं बचपन से आज तक उनसे परिवार के सदस्य की तरह जुड़ा हुआ हूँ लेकिन कुछ क्षण विशेष होते हैं जो एक उदाहरण बन जाया करतें हैं स्वामी जी नवम्बर मास में एक सप्ताह के लिए विशेष कार्यक्रम बनाया करते थे दीपावली के बाद आने वाली गोपाष्टमी से लेकर पूर्णिमा तक की कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली और प्रेरणादायक होता था मुझे भी कई वर्षो तक इस पुण्य को प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है स्वामी जी जब दिल्ली से चलते थे तो उनकी गाड़ी में श्री जगवीर सिंह जी एडवोकेट, श्री प्रेमपाल जी शास्त्री, श्री वीरेन्द्र जी अथवा विरजानन्द जी पहलवान होते थे गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर आकर रात्रि में निवास करते और वहां से साधु आश्रम अलीगढ़ का सम्मेलन करके फिर बु० शहर होते हुए गढ़गंगा के मेले पर आर्य समाज एवं समाज सुधार संस्थाओं के मंचों पर बोलकर तिगरी मुरादाबाद के मेले में जाकर भाषण देते फिर कभी बिजनौर होकर कभी सीधे ही शुक्रताल गुरूकुल के सम्मेलन में जाकर भाषण देते थे और पूर्णिमा का यज्ञ वहीं करके वापस दिल्ली की ओर चलते थे मैं कभी मेरठ उतर जाता कभी गाजियाबाद से वापस आता था इस प्रकार कई वर्षो तक ओर जब तक सांसद रहे प्रायः प्रतिवर्ष हमें यह सौभाग्य मिला तथा सेवा करने का हमें गर्व है कि स्वामी जी ने हमें इस प्रकार की प्रेरणा दी जिसे जीवन में कभी भुलाया नही जा सकता उनका व्यवहार कितना मधुर चेहरे पर सौम्यता शालीनतास्वत आकर्षक होती थी बु० शहर मेरठ- मुरादाबाद गा० बाद जिलों के कई ग्रामों में कई बार सम्मेलन में स्वामी जी को यज्ञ एवं सम्मेलन के लिए जब भी आमन्त्रित किया स्वामी जी प्रसन्नता पूर्वक आये और ग्राम्य वातावरण में आकर किसान लोगों में आर्य समाज की चर्चा से उन्हें प्रभावित करते थे। गंगा स्नान पर गढ़मुक्तेश्वर में आया ही प्रचार कैम्प लगाया उसका भी बड़ा प्रभाव क्षेत्र में हुआ कुम्भ मेला हरिद्वार में पूरे मास तक पाखण्ड खण्डिनी पताका को लहराया और फिर तो कुम्भ इलाहाबाद आदि कई स्थानों पर जाकर लगता था कि आर्य समाज की भी कोई पहचान है आर्यसमाज में भी साधु महात्मा है युवा सन्यासी जब एक साथ चलते थे तो शोभा अलग ही प्रभावित होती थी अन्य साधुओं से अलग चिन्तन समाजसेवा कुरीति उन्मूलन एवं राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत विचारों से लगता था कि आने वाला समय आर्य समाज में कुछ नई क्रान्ति को जन्म देकर इसका कायाकल्प करेगा। पर दुर्गाम्य ही कहा जायेगा कि अभी तक भी कोई स्थाई हल नहीं निकल पाया है। स्वामी इन्द्रवेश जी ने उ०प्र० के बिजनौर जनपद में स्वामी केवलानन्द निगमागम आश्रम द्वारा नगरगंज को केन्द्र बनाकर युवकों के निर्माण की वानप्रस्थ सन्यास आश्रम की योज़ना बनाई और प्रारम्भ किये गए कार्य को अभी ज्यादा समय नहीं हुआ था कि स्वामी जी का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया और आश्रम का भी खेल ढीला हो गया अब स्वामी ओमवेश जी अपना समय देकर सम्भाल रहे है दिल्ली माई जगवीर सिंह जी कार्यालय देख रहे हैं जब पता चला कि स्वामी इन्द्रवेश जी का अभिनन्दन ग्रन्थ लिखा जा रहा है तो मैंने भी कुछ भाव इन पंक्तियों के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास किया क्योंकि स्वामी जी के विषय में आने वाला समाज जब मूल्यांकन करेगा तब पता चलेगा कि स्वामी जी का एक अध्याय अपने आप में वेश प्रकरण के नाम से युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा प्रद रहेगा हमारे जैसे हजारों युवक आर्यसमाज को स्वामी जी ने समर्पित किये हैं जो सदैव आपकी यश पताका को फहराते रहेगें।

गुरूकुल पूठ
गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो. ९८३७४०२१९२

शहीद शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद जिन्हें क्रांतिकारी इतिहास में "सौ युद्धों का नायक भी कहा गया है–

-उदय खत्री

सन् १९२९-३० की घटना है। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। कानपुर स्टेशन के प्लेटफार्म नं.१ पर बड़ी संख्या में हथियारबन्द पुलिस तैनात कर दी गई थी। प्लेटफार्म से बाहर जाने वाले दोनों गेटों पर सी.आई.डी. का मज़बूत जाल बिछा था। सारी व्यवस्था की देखभाल कानपुर का सी.आई.डी. इंचार्ज रायबहादुर शम्भू नाथ स्वयं कर रहा था। उसे कुछ ही घंटे पहले उस क्रांतिकारी के इलाहाबाद से कानपुर पहुँचने की अत्यन्त गुप्त सूचना मिली थी, जिसे पकड़ने के लिए ब्रिटिश शासन की शक्तिशाली पुलिस वर्षों से सारे हिन्दुस्तान की खाक छान रही थी और वह अभी तक उसके हाथ नहीं लगा था। सूचना देने वाले ने यह भी बतलाया था कि वह क्रांतिकारी सांवले रंग का काफी लम्बा तगड़ा है तथा धोती, कमीज व कोट पहने है। उसके साथ उसका एक साथी भी है और वे दोनों ठंड से बचने के लिए गर्म शाल ओढे होंगे। यह सारी व्यवस्था उन्हीं दोनों को पकड़ने के लिए ही की गयी थी।

सूचना बिल्कुल सही थी ये विख्यात क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद थे जो इलाहाबाद में अपने क्रांतिकारी साथी विश्वनाथ वैशम्पायन उर्फ बच्चन के साथ घर से निकले तो थे गर्म शाल ओढ कर परंतु रास्ते में एक दर्जी के यहां पहले से सिलने को दिये गर्म सूट को पहन लिया था तथा सिर पर फेल्ट हैट भी लगा ली थी। अपने पुराने कपड़े धोती, कमीज व कोट अपने अन्य सामानों के साथ रख लिया था। आजाद ने सम्भवतः अपने जीवन में पहली और अन्तिम बार ये वस्त्र पहने थे। ये एक संयोग ही था।

इलाहाबाद से आने वाली ट्रेन ठीक समय पर कानपुर स्टेशन के प्लेटफार्म नं.-१ पर आकर खड़ी हो गयी। हथियार बंद पुलिस ने तुरंत दोनों ओर से ट्रेन को घेर लिया। आजाद को यह समझते देर न लगी कि यह सारी व्यवस्था किसके लिए की गयी है। ट्रेन से उतरने से पहले उन्होंने तेज़ी से टायलेट में जाकर अपनी दोनों पिस्टलें लोड कर ली और साथी बच्चन को भी ऐसा ही करने का आदेश दिया। साथ ही यह हिदायत भी दी कि यदि किसी ने टोका या रूकने को कहा तो गोली से उत्तर देना।

बड़े इत्मीनान से अन्य यात्रियों के साथ साथ उन दोनों ने भी कुली द्वारा अपना सामान बाहर निकलवाया और भीड़ में सीधे बाहर निकलने के बजाय आजाद ने कुछ सोच कर कुली को सामने पड़ी बेंच पर सामान रखने का आदेश देते हुए कहा- भाई मेरी छाती में थोड़ा दर्द हो रहा है, थोड़ी देर इस बेंच पर बैठ कर आराम करने के बाद ही बाहर जा पाऊँगा, इस देरी के लिए तुम्हारा जो भी नुकसान होगा हम पूरा कर देंगे''

दोनों साथी बहुत शान्तिपूर्वक बेंच पर बैठ गए। बीच बीच में वे दोंनो आपस में धीमे धीमे कुछ बतियाते भी रहे। कुली उनके पास ही खड़ा रहा। आजाद ने अपनी फेल्ट हैट इस प्रकार झुका ली थी कि किसी को भी उनका चेहरा ठीक से दिखाई न दे और न ही किसी को यह शक हो कि जानबूझ कर हैट को झुकाया गया है।

उधर दोनों रास्तों पर सी.आई.डी. वाले बाहर निकल रहे यात्रियों में से जिसे भी सांवला, तगड़ा, धोती कमीज व कोट पहने एवं शाल ओढे देखते उसे भीड़ में से अलग ले जाकर कड़ी पूछताछ करते। ट्रेन के प्रत्येक डिब्बे में भी उन्हें अच्छी तरह तलाशा गया परंतु उनमें से किसी ने भी यह कल्पना नहीं की थी कि जिसे वे तलाश रहे हैं वह बड़े इत्मीनान से उनके सामने बेंच पर बैठा हुआ है। किसी ने टोकना तो दूर उनकी ओर झांका तक नहीं।

ट्रेन आगे के लिए रवाना हो गयी। यात्री भी एक एक करके बाहर निकल लिए। प्लेटफार्म पर लगभग सन्नाटा सा छा गया। सी.आई.डी. वाले तथा पुलिस वाले भी कुछ देर और इधर उधर चक्कर मारने के बाद यह विश्वास लिए लौट गये कि संभवतः आजाद इस ट्रेन से कानपुर आए ही नहीं या पहले ही कहीं उतर गए अथवा मुखबिर से सूचना देने में कहीं भूल हुई। उस दिन सी.आई.डी. इंचार्ज रायबहादुर शंभू नाथ ने मुखबिर को बुला कर खूब फटकारा।

इधर आजाद व साथी बच्चन को जब इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि अब कोई खतरा नहीं है उन्होंने अपना सामान कुली के सिर पर रखवाया और छावनी की ओर से स्टेशन से बाहर निकलकर ग्वालटोली मोहल्ले के लिए एक सधा हुआ तांगा किया। रास्ते में तांगे वाले को यह कह कर तांगा तेज चलाने को कहा कि उनके रिश्तेदार की हालत गंभीर है हमें जितना जल्दी हो सके पहुँचाओ। तांगा तेजी से ग्वालटोली पहुँचने पर वहां पार्टी द्वारा लिए गए मकान में अपना सामान उतरवा कर उन्होंने तांगे वाले को विदा किया। फिर एक क्षण की देर किए बिना उसी मकान के पिछले दरवाजे से बाहर निकल कर दूसरा तांगा किया और ए.बी. रोड स्थित आर्य समाज मंदिर पहुँचे तथा ऊपर के हिस्से में श्री राम चन्द्र मुसद्दी के निवास पर वे दोनों साथी ठहर गये। उस निवास को उन्होंने सम्भवतः इसीलिए निरापद समझा था कि उसके ठीक नीचे वाले हिस्से में उसी सी.आई.डी. इंचार्ज रायबहादुर शंभू नाथ का अपना निवास था जो कुछ देर पहले पुलिस की फौज लिए कानपुर स्टेशन पर आजाद को तलाश रहा था और खाली हाथ वापस लौटा था। वहां अपने अन्य साथियों से सम्पर्क व जरूरी सलाह मशविरा कर वे दोनों साथी उसी रात्रि वहां से सकुशल इलाहाबाद लौट गये।

काफी दिनों बाद सी. आई.डी. वाले यह जान कर अवाक रह गये कि जिसकी वे इतनी जोरों से तलाश कर रहे थे वह इतनी चतुराई से उन्हीं के सिर पर आकर टिका था। यह था चन्द्रशेखर आजाद में बड़े से बड़े संकट में भी साहसिक तथा सही निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता का एक उदाहरण।

आजाद को अन्याय सहन नहीं था वे तुरंत उसका प्रतिकार करते। सन् १९२४ के जाड़े की घटना है। आजाद व रामकृष्ण खत्री (लेखक के पूज्य पिता) बनारस में अलग अलग विद्यालयों में संस्कृत के छात्र थे। एक दिन दोनों का परिचय हुआ। परिचय घनिष्ठता में बदली और आजाद श्री खत्री को क्रांतिकारी दल में ले आये, जिन्हें आगे चलकर काकोरी क्रांतिकारी षडयंत्र केस के अन्तर्गत दस वर्ष कठोर कारावास का दण्ड मिला। एक दिन आजाद और श्री खत्री बनारस स्टेशन पर टहल रहे थे वहां कुछ अंग्रेज सिपाही भी चहलकदमी कर रहे थे। आजाद ने अकस्मात उनमें से एक अंग्रेज फौजी को अपनी सिगरेट का धुंआ एक हिन्दुस्तानी युवती के मुह पर फेंकते हुए देख लिया। तिलमिलाए हुए आजाद सीधे उस फौजी के पास पहुंचे और आव देखा न ताव उसे पूरी शक्ति से झापट कर नीचे गिरा दिया और उसके ऊपर बैठ कर लगे घूंसो और थप्पड़ों की मार लगाने। वह गोरा फौजी अपने दोनों हाथ उपर किए मार खाता जा रहा था और माफी मांगता हुए एक ही वाक्य बार बार दुहरा रहा था - आई रज्म सारी, आई एम रियली वेरी सारी। शायद उस फौजी को अपनी गलती का अहसास हो चुका था। उसके अन्य साथी यह हंगामा देखकर वहां से फौरन रफूचक्कर हो गए। दरअसल वे फौजी अपने कैम्प अधिकारी से बिना अनुमति लिए वहां टहलने आ गए थे।

यह सुन कि एक अंग्रेज फौजी को कोई हिन्दुस्तानी पीट रहा है एंग्लो इंडियन स्टेशन मास्टर दौडा दौड़ा वहां पहुचा और आजाद से बहस करने लगा। इस पर श्री खत्री ने आगे बढ़ कर स्टेशन मास्टर से कहा- आप इनसे तो बहस कर रहे है किंतु उस फौजी से तो पूछिये कि उसने क्या किया और क्यों किया। उसकी हरकत से तो हिंदुस्तानियों और अंग्रेजों में बलवा हो सकता है। अतः आप मामले को न बढ़ायें अन्यथा किसी भी परिणाम की जिम्मेदारी आपकी होगी।

फौजी अब भी डरा हुआ था। वह केवल इस मौके की ताक में था कि कब उसे मुक्ति मिले और वह भाग निकले। स्टेशन मास्टर उसकी और मुखातिब हुआ और उसके पूछने से पहले ही वह फौजी एक तरह से अपनी गलती स्वीकार करने की मुद्रा में स्टेशन मास्टर से गिड़गिडाने लगा- आई एम रियली वेरी सारी, प्लीज लेट मी गो। इस पर स्टेशन मास्टर ने मामले को रफा दफा करने में ही भलाई समझी तथा आजाद को आइन्दा कानून हाथ में न लेने तथा उस गोरे फौजी को भविष्य में फिर कभी ऐसी हरकत न करने की चेतावनी देकर वहां से भाग जाने को कहा।

स्टेशन मास्टर का इतना कहना था कि वह फौजी वहां से ऐसा भागा कि मानों किसी दौड़ की रेस में भाग रहा हो।

सौभाग्य से उस समय आजाद की पिस्टल श्री खत्री के पास थी और वहां उपस्थित भीड़ में कोई भी व्यक्ति उन दोनों क्रांतिकारी साथियों को पहचानता भी न था अन्यथा उस समय आजाद इतने गुस्से में थे कि कोई भी घटना घटित हो सकती थी।

चन्द्रशेखर आजाद का सारा जीवन आश्चर्यजनक किंतु उत्प्रेरक घटनाओं से भरा पड़ा है। उनका जन्म २३ जुलाई १९०६ को भारत के सबसे पिछड़े इलाके मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भावरा नाम ग्राम में हुआ था। झाबुआ पहले अलीराजपुर रियासत की एक तहसील थी। आश्चर्यजनक शब्द का प्रयोग करने का कारण यह है कि आजाद एक ऐसे इलाके में पैदा हुए जिसका देश की राजनीति से दूर से भी कुछ लेना देना नहीं था और ना ही उनके परिवार में किसी का राजनीति से कोई सम्बन्ध था। (वैसे चन्द्रशेखर आजाद के पूर्व पुरूषों ग्रहां तक कि उनके पिता पं. सीताराम तिवारी का जन्म स्थान उ.प्र. के उन्नाव जिले के बदरका नामक ग्राम था, परंतु दुर्भिक्ष में बेरोजगारी के कारण अपनी गर्भवती पत्नी जगरानी देवी के साथ जन्मभूमि छोड़ कर भावरा जाना पड़ा वहां वे पांच रूपये महीने पर उद्यान विभाग में साधारण माली का कार्य करने लगे, यहीं बालक चन्द्रशेखर का जन्म हुआ) फिर भी आजाद का बिना किसी गुरू से प्रशिक्षण पाए एवं कम शिक्षित होने के बावजूद क्रांतिकारी संघर्षों में तीव्र बुद्धि के सर्वश्रेष्ठ क्रांतिकारियों में स्थान पाना अपने आप में चमत्कार ही कहा जायेगा।

स्कूल में पढ़ना संभवतः उनकी कुण्डली में नहीं था। उन्हें बचपन से ही नीरस अक्षरों वाले पाठ में कोई दिलचस्पी नहीं थी। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। कम उम्र में ही उनके पारिवारिक मित्र श्री मनोहर लाल त्रिवेदी ने उन्हें अलीराजपुर में ही एक छोटी मोटी नौकरी में लगवा दिया था। वहां आजाद की बम्बई से आए एक मोती बेचने वाले से दोस्ती हो गयी और उसी के साथ बिना किसी को बताए बम्बई चल दिए।

बम्बई में जहाजों को रंगने वाले रंगसाजों के हेल्पर का काम पा गए। छोटी उम्र के कारण यह बड़ी मेहनत व कष्ट का जीवन था। जो कुछ भी आमदनी होती थी उससे वह दोनों समय किसी प्रकार होटल में जाकर भोजन करते। मजदूरों का जीवन कितना कष्टप्रद होता है उसका व्यावहारिक अनुभव उन्हें बम्बई में ही कई महीने रह कर हुआ।

बम्बई में रहते हुए उन्हें पता चला कि बनारस में निर्धन ब्राह्मण बच्चों के लिए संस्कृत शिक्षा एवं रहने तथा खाने पीने की निःशुल्क व्यवस्था है अतः आजाद भी जल्द ही बंबई से बनारस आ गए संस्कृत पढ़ने।

घर पर जब उनके माता पिता पढ़ाना चाहते थे तब वे नहीं पढ़े और बनारस आकर जब वे पढ़ाई की ओर बढ़े भी तो १९२१ के असहयोग आन्दोलन ने उन्हें आजादी का दीवाना और राष्ट्रभक्त बना दिया तथा

शेष पेज ७ पर देखें....

क्या अनुच्छेद ३७० का समर्थन देशद्रोह नहीं ?

रास्ते को भी दोष दे, आँख भी कर लाल।
चप्पल में जो कीलें हैं पहले उनको निकाल।

इन दो पंक्तियों में इतनी बड़ी सीख है, जिसकी तो तथाकथित राजनीतिक लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। कश्मीर के रास्ते को हम भले दोष दें, आँख कितनी भी लाल करके गुस्से का इजहार करें, परन्तु सत्य से कैसे विमुख हुआ जा सकता है कि कश्मीर की समस्या पंडित जवाहरलाल नेहरू की देन है। भाजपा ने बात धारा ३७० को हटाने की चलाई तो जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने धमकी भरे लहजे में कहा कि भाजपा में हिम्मत है तो वह धारा ३७० को हटाकर दिखाए। ऐसा कोई भी प्रयास हमारी लाशों से गुजरकर ही पूरा होगा। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवानी ने उमर अब्दुल्ला के इस बयान पर कड़ी नाराजगी जताते हुए उन्हें सलाह दी कि वह धोखे और छल से शब्दों का प्रयोग न करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाजपा शुरू से ही धारा ३७० के खिलाफ थी। उन्होंने उमर को सलाह दी कि भाजपा के विचारों से असहमति का उन्हें पूरा अधिकार है, परन्तु वे आक्रामक भाषा का प्रयोग न करें।

जहाँ तक इस मुद्दे पर कांग्रेस का सवाल है, वह बोलेगी नहीं, क्योंकि वह पंडित नेहरूजी की गलती को गलती नहीं कह सकती। नरेन्द्र मोदी ने ठीक ही कहा है कि सरदार पटेल ने पूरे देश को एक कर दिया, लेकिन पंडित नेहरू के पास जम्मू कश्मीर का मसला था, जिन्होंने आधा कश्मीर यानी २/५ कश्मीर पाकिस्तान को दे डाला और आधा ३७० लागू कर भारत के जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा दे डाला। एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो संविधान बना दिए गए। आखिर यह अनुच्छेद ३७० क्या बला है? भारतीय संविधान में अनुच्छेद ३७० को शामिल करने के क्या दुष्परिणाम निकले ? इस अनुच्छेद से हमने क्या खोया और उन्होंने क्या पाया?

सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक ही नागरिकता है जिसे हम भारतीय नागरिकता कहते हैं। जम्मू और कश्मीर में एक राज्य नागरिकता की भी व्यवस्था है। यहाँ के नागरिक को भारत के अन्य नागरिकों जैसी सुविधाएँ हैं परन्तु अन्य प्रदेशों के नागरिक यहाँ तक कि बिहार से आये राज्यपाल भी यहाँ विधानसभा में मतदान नहीं कर सकते। जबकि लोकसभा में वह मतदान कर सकते हैं। थोड़ी विडम्बनाएँ और देखें। इस प्रदेश की महिला का यदि भारत के किसी अन्य प्रदेश में विवाह होता है तो उसे अपनी पैतृक सम्पत्ति और प्रदेश की नागरिकता से हाथ धोना पड़ सकता है, परन्तु यदि वह किसी पाकिस्तानी से विवाह करती है तो वह यहाँ की नागरिकता प्राप्त कर सकता है। भारत के संविधान के केवल अनुच्छेद १ और अनुच्छेद ३७० की ही यहाँ प्रासंगिकता है अतः भले आप इसे अपनी अभिन्न अंग कहते रहिए, इस पूरे भारत में जम्मू कश्मीर ही ऐसा राज्य है, जिसका अलग संविधान है। भारत के संविधान से इसे कोई लेना देना नहीं। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित सारे फैसले भी यहाँ लागू नहीं होते और संसद द्वारा पारित वही कानून यहाँ लागू हो सकते हैं, जिसकी जम्मू कश्मीर विधानसभा पुष्टि कर दे।

आपने देखा होगा संसद द्वारा पारित कानूनों में स्पष्ट लिखा रहता है- 'एप्लिकेबल इन होल इंडियन यूनियन एक्सेप्ट जे एंड के' सचमुच यह कितने शर्म की बात है। यहाँ ध्वज भी एक नहीं, दो हैं। एक ध्वज इस प्रदेश का है जो तिरंगे के साथ-साथ फहराया जाता है।

अति संक्षेप में पंडित जवाहर लाल नेहरू इस अनुच्छेद ३७० को लेकर बाबा साहब के पास पहुँचे और तर्क-कुतर्क देकर उनकी राय जाननी चाही। बाब साहब बोले ऐसा प्रावधान प्राणघातक सिद्ध होगा और इसके फलस्वरूप बड़ी अलगाववादी धारणा पनपेगी, आप इसका जिक्र ही न करें। बाबा साहब प्रखर राष्ट्रवादी थे। पंडित जवाहर नेहरू की इस बात से वे अत्यन्त व्यथित हुए। तीसरे दिन अनुच्छेद ३७० के उसी मसौदे को लेकर उनके घर के सामने शेख अब्दुल्ला खड़े थे। पंडित नेहरू ने उन्हें कहा था कि बाबा साहब को इस विषय में मनाना जरूरी है। शेख को देखते ही बाबा साहब बिफर पड़े थे। उन्होंने कहा था- 'तुम चाहते हो कि भारत पर कश्मीर की रक्षा की सारी जिम्मेदारी रहे परन्तु भारतीय संसद का उस पर कोई अधिकार न हो। मैं इस देश का विधि मंत्री हूँ और मुझे भारत के हितों की रक्षा करनी है। तुम वापस चले जाओ फिर मेरे पास न आना।' शेख ने सारी स्थिति पंडित नेहरू को बताई तो वह चिन्ता में पड़ गए। उसी रात पंडित नेहरू ने देश के रियासती राज्यमंत्री गोपाल स्वामी आयंगर को बुलवाया और धमकी भरे शब्दों में उनसे कुछ ऐसी बातें कहीं जिनके कारण वह इस प्रस्ताव को संविधान सभा के समक्ष रखने को तैयार हुए।

संविधान सभा में इसका बड़ा भारी विरोध हुआ। यहाँ तक कि हसरत मोहानी ने चेतावनी भरी भाषा में कहा - 'अब इस सभा को यह समझ लेना चाहिए कि पंडित नेहरू की वास्तविक मंशा क्या है? उस समय इसे पूर्णतः 'अस्थायी' बताया जा रहा था परन्तु अब तक यह चला आ रहा है। इसने अलगाववाद को ही बढ़ावा दिया है। आखिर इसे बनाए रखने का औचित्य क्या है? यदि सर्वोच्च न्यायालय इसके परिपेक्ष्य में अस्थायी शब्द की व्याख्या कर दे, तो यह स्वतः ही निरस्त हो जायेगा। मैंने इतना लम्बा आलेख लिखा है और मैं इसी पृष्ठभूमि में भारत की जनता से यह पूछना चाहता हूँ कि अनुच्छेद ३७० का जम्मू कश्मीर में लागू रहना राष्ट्रद्रोह है कि नहीं? अगर यह राष्ट्रद्रोह है, तो हटाए जाने के मार्ग में जो भी अड़चने डालता है। वह राष्ट्रद्रोही है कि नहीं ?

-सत्यार्थ सौरभ से साभार

प्रवेश सूचना

गुरूकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, तिलहर शाहजहाँपुर (उ.प्र.) प्रवेश प्रारम्भ है। संस्कृत, व्याकरण, संस्कृत साहित्य, तथा आधुनिक विषय अंग्रेजी, गणित विज्ञान सहित, प्रयोगशाला एवं कम्प्यूटर की शिक्षा उपलब्ध है। रहने तथा भोजन की उचित व्यवस्था है। शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित है, प्रवेश निःशुल्क तथा मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति की सुविधा आने का मार्ग-यह गुरूकुल शाहजहांपुर में तिलहर रेलवे स्टेशन से ३ किमी. दूरी पर है रिक्शा तथा टैम्पो के द्वारा आया जा सकता है।

सम्पर्क सूत्र-८४००४५३६५१, ८३५४६८६१७६

अंधेरे में जो बैठे है नजर उन पर भी कुछ डालो

प्रस्तुति : मनीष शर्मा

भारत में आर्य समाजों की कई संस्थाओं द्वारा पारितोषिक समय-समय पर दिये जाते है। भारत नेपाल के परिक्रमावासी स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती ने १९६३ से २०१३ तक निरन्तर ५० वर्ष साईकिल, मोटर साईकिल, रेल, बस तथा पैदल या जहां जो भी साधन मिला, यात्रा की। अब भी ६० वर्ष की उम्र में रेल-बस से यात्रा चल ही रही है। एक किलोमीटर तक ५५ किलो वजन उठाकर तथा ५ किलोमीटर पदयात्रा कर लेते है। स्वास्थ्य एकदम से ठीक है। अभी तक कभी किसी भी प्रकार से बीमार नहीं हुए। एकदम निर्व्यसनी, चाय-कॉफी नहीं पीते, अन्य भी कोई व्यसन नहीं। यात्रा, यात्रा, यात्रा निरन्तर चल रही है। यह यात्रा कहाँ, कब, क्यों, कैसे समाप्त हो जाये, कहा नहीं जा सकता। सभी सलाह देते है कि यात्रा बन्द करके एक स्थान पर ही रहो, पर कोई यह नहीं कहता कि यहाँ बैठो।

तो क्या पुरस्कार देने वाले इधर जो स्वामी प्रवासानन्द जी सरस्वती के लिए फिक्स डिपोजिट के रूप में भारतीय स्टेट बैंक, ऑन-लाईन खाता नं. ३९०, ६०१, ६६७, ६४ (३९०,६०१,६६७,६४) तीन सौ दस, छः सौ एक, छः सौ सत्यानवे, चौरानवे, में एक हजार रूपये कम से कम कोई भी आर्यजन, आर्य समाज, आर्य संस्था या पुरस्कार प्रदाता पूरी रकम इसमें जमा करें। वरिष्ठ नागरिक स्वामी जी को ६ प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिल रहा है। मासिक ७४४/- रूपये, एक लाख की एफ.डी. पर, इस तरह से जितने लाख की एफ.डी. होगी उतना ही ब्याज मिलेगा। जिससे यात्रा कई स्थानों पर रूक-रूक कर ना करके, रेल से रिजर्वेशन से ही जाते-आते आराम से होते रहेगी। जब तक जीवन है। स्वामी जी, भूमिगत स्वतंत्रता सैनानी, इन्दा गाँधी के समय भी आपातकाल में भूमिगत रहे, आर्यसमाज के हिन्दी, गौरक्षा सत्याग्रही रहे। अपने गृहस्थ जीवन में संतानों को गुरूकुलों में पढ़ाया। अर्न्तजातीय विवाह भी किये, जो अब तीन पीढ़ी में है।

महर्षि दयानन्द की महानता

संसार के महापुरुषों में महर्षि दयानंद की शान निराली है। अन्य महापुरुषों में किसी में एक गुण है तो किसी में दूसरा, कोई विद्वान है तो योगी नहीं, कोई योगी तो सुधारक नही, कोई सुधारक है तो निर्भीक नहीं, कोई निर्भीक है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो सन्यासी नही, कोई सन्यासी है तो निर्भीक वक्ता नही, कोई वक्ता है तो लेखक नहीं, कोई लेखक है तो सदाचारी नही, कोई सदाचारी है तो कोई परोपकारी नही, कोई परोपकारी है तो कर्मठ नही, कोई कर्मठ है तो त्यागी नही, कोई त्यागी है तो देश भक्त नहीं, कोई देशभक्त है तो वेद भक्त नहीं, कोई वेद भक्त है तो उद्धार नहीं, कोई उद्धार है तो शुद्ध आहार नहीं, कोई शुद्धहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल व दयालु नही, कोई सरल व दयालु है तो संयमी नहीं, परन्तु आप ये सभी गुण एक जगह देखना चाहें तो देव दयानन्द में देख सकते है। आचार्यो के आचार्य, परिव्राजक सम्राट, वेदविद्याधिपति, शास्त्र निष्णात, सर्व तंत्र स्वतंत्र व्याकरण महोदधी, ब्राह्मण कुल कमल भास्कर, शास्त्रार्थ महारथी, दिग्गज, मेधावी, अदभुत, अलौकिक, तार्किक, मुक्त आत्मा।

जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरूकुलम् रसूलपुर कायस्थ मडियांवा लखनऊ में कक्षा १ से १२ तक प्रवेश आरम्भ है। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें-

आचार्य - विश्वव्रत शास्त्री,
लखनऊ
चलभाष- ०८७६५८३६३०८, ०६३०५३३७७६१

महान बनने के लिए इनको मिला परिवार के किसी एक सदस्य का सहयोग

खुशहाल चन्द आर्य

जब हम अपने गौरवशाली इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि अधिकतर महापुरुषों को महान् बनने में उनके पूरे परिवार का सहयोग होता है, जैसे श्री रामचन्द्र जी को महान बनाने में उसकी धर्म पत्नी सीता, भाई भरत व लक्ष्मण, माता कौशल्य, माता कैकई, हनुमान जी, बालि, सुग्रीव व अंगद आदि अनेकों का सहयोग मिला था। इसी प्रकार श्री कृष्ण को महान बनाने में बाबा नन्द, माता यशोदा, माता देवकी, पिता वासुदेव, पांचों पाण्डव, दादा भीष्म, गान्धारी आदि अनेको का सहयोग मिला था। परन्तु हम यहां इन तीन महापुरुषों की विवेचना करेंगे जिनको उनके किसी एक सदस्य का ही सहयोग उनको महान् ही नहीं बल्कि महानतर व महानतम भी बना दिया। ये तीन महापुरुष हैं, शेर शिवाजी, स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज, जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे लिख रहे हैं।

१. शेर शिवा जी - शेर शिवा जी को इतना महान बनाने का तथा अपने राष्ट्र के प्रति इतना अधिक समर्पित भाव जागृत करने का श्रेय उसकी महान माता जीजा बाई को जाता है। जीजा बाई ने अपने सुपुत्र शिवा को लोरियों में, गीतों में राष्ट्रीय भावना भरती रहतीं थीं। यही कारण था कि शिवा जी एक सच्चा राष्ट्रवादी महापुरुष बन गये और अपनी सीमित सैन्य शक्ति से औरंगजेब जैसे अन्यायी, अत्याचारी व बलवान बादशाह को भी नाकों चनें चबा दिये। उसके अनेकों प्रयत्नों के बावजूद भी शिवा जी उसकी पकड़ में नहीं आये और शिवा जी अपना एक छोटा सा हिन्दू राज्य स्थापित करने में सफल हो गये।

२. स्वामी श्रद्धानन्द - स्वामी श्रद्धानन्द जिसका बचपन का नाम मुंशीराम था। उसका जन्म सन् १८५६ जलन्धर जिले के गांव तलवन में हुआ था। उनके पिता नानक चन्द पहले तो फोज मै तहसीलदार रहे फिर पुलिस कोतवाल बरेली के बना दिये गये। एक कोतवाल का पुत्र होने के कारण उनके पास धन का अभाव नहीं था और ऊपर में सत्ता का अहंकार। इसलिए वह एक बिगड़ैल बेटा होता गया। दुनियां के सभी अवगुण उनमें घर कर गये और उनका ईश्वर पर विश्वास उठ गया। एक बार बरेली में आर्य समाज में प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती आ गये और पिता नानक चन्द के कहने से मुंशीराम स्वामी जी के व्याख्यान सुनने चला गया। यहां उसके हृदय पर स्वामी जी का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उस बिगडैल बालक का जीवन ही बदल गया और वह केवल आर्य समाज का ही नहीं बल्कि भारत का वह एक महान देश सुधारक और एक अग्रणीय नेता बन गया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किये जिनको हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जिनमें मुख्य कार्य ये हैं।

२ मार्च १९०२ में हरिद्वार के समीप गंगातट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। सर्वप्रथम अपने दो पुत्रों को उसमें प्रविष्ट कराया और अपनी पूरी सम्पत्ति उस गुरुकुल में लगा दी जिसका परिणाम यह निकला कि आज वह गुरुकुल एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रूप में माना जाता है। १५ वर्षों तक उसका सुन्दर संचालन करके १० अप्रैल १९१७ को आपने सन्यास ग्रहण करके स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। इसके बाद आप पूर्णतः राष्ट्रीय कार्यक्रमों व समाज सुधार के कार्यों में लग गये।

सन्यास धारण करने के बाद आप ३० मार्च १९१९ में रोलट एक्ट के विरोध में एक प्रभावशाली और एतिहासिक जुलूस निकाला जिसमें आपने गोरी सेना के सामने अपनी छाती खोल कर गोली चलाने का ऐलान किया। गोरी सेना ने गोली नही चलाई और जुलूस आगे बढ़ गया। सन् १९१९ में जलियांवाला भीषण काण्ड होने से पंजाब में एक भयावह स्थिति बन गई थी। ऐसी स्थिति में अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन का स्वागतध्यक्ष बन कर अधिवेशन को सफल किया और अपना स्वागतध्यक्ष भाषण हिन्दी में सुनाकर कांग्रेस के इतिहास में एक नया उदाहरण पेश किया। स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। उन्होंने मुसलमानों की विशाल सभा में ४ अप्रैल १९२५ में दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद की मीनार पर बैठकर वेद-मंत्र पढ़कर विशालसभा को सम्बोधित किया।

जिसको सुनकर मुसलमान नवयुवक बहुत प्रसन्न हुए। यह दिल्ली के इतिहास में एक नई घटना थी। फिर ६ अप्रैल को फतेहपुरी मस्जिद से भाषण देकर स्वामी जी ने मुसलमानों का दिल जीत लिया। फिर बाद में स्वामी जी अपने आखिरी दिनों में शुद्धि का कार्य करने लगे और उन्होंने हजारों मलकाना राजपूतों तथा अन्य लोगों को शुद्ध करके हिन्दू बनाया, तब कट्टर मुसलमान नाराज़ हो गये और २३ दिसम्बर, १९२६ को एक अब्दुल रशीद नाम का धर्मान्ध नवयुवक ने गोलीमार कर स्वामी जी की हत्या कर दी।

स्वामी जी की धर्मपत्नी जिसका नाम शिवा देवी था। वह बड़ी पतिव्रता नारी थी। जब स्वामी जी अनेकों दुर्गुणों व व्यसनों में फंसे हुए थे, तब वे रात्री को दो-तीन बजे घर आते थे और आकर उल्टी करते थे, तब उनकी धर्म पारायण पत्नी अपने पति की बिना कुछ खाए इन्तजार करती थी। आने के बाद उनकी की हुई उल्टी को साफ करके उनको भोजन देती थी। एक दिन स्वामी जी ने उससे पूछ ही लिया कि हे! शिवे क्या तुमने भोजन कर लिया। तब शिवा देवी ने कहा कि पतिदेव! आपको भोजन करवाने से पहले मैं कैसे भोजन कर सकती हूँ। यह सुनकर स्वामी जी अवाक् रह गये। इसका असर स्वामी जी पर यह पड़ा कि उन्होंने अपनी सभी बुरी आदतें छोड़ दी। स्वामी जी ने अपनी जीवनी में स्वयं लिखा है कि मेरे जीवन को बदलने में पहला सहयोग स्वामी दयानन्द का है और दूसरा सहयोग मेरी धर्मपत्नी शिवादेवी का है। इस प्रकार शिवा देवी ने अपने बिगड़ैल पति को अपने आचरण के द्वारा सुधार कर उसे एक महानपुरुष बना दिया।

३- कर्मयोगी महात्मा हंसराज - महात्मा हंसराज का जन्म १९ अप्रैल, १८६४ को बजवाड़ा के एक छोटे से ग्राम में एक निर्धन परिवार में हुआ था। यह कौन जानता था कि यह जन्म लेने वाला बालक आगे चलकर लार्ड मैकाले द्वारा १८३५ में घोषित अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के लिए एक प्रबल विद्रोही बन विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति का प्रवर्त्तक एक प्रचारक सिद्ध होगा। महात्मा हंसराज को लाहौर के गवर्नमेन्ट कॉलेज में अध्ययन करते हुए लाला लाजपत राय व पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे प्रतिभावान सहपाठी मिल गये। इन तीनों के विचार एक समान थे। तीनों ही विदेशी विचारधारा को समाप्त होता हुआ देखना चाहते थे। इस समय आर्यसमाज एक जीवन्त संस्था थी। लाहौर आर्य समाज के प्राण लाल सांईदास जी माने जाते थे। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और आकर्षक था कि उनके सम्पर्क में आने वाला उनका ही बन जाता था। ये तीनों युवक भी उनके सम्पर्क और संसर्ग में आकर आर्य समाज में आने लगे। सन् १८८३ में महर्षि दयानन्द का विषपान से बलिदान हो गया। नाव का खिवैया नाव को मझधार में छोड़कर चला गया। चारों ओर अन्धेरा छा गया। लाहौर के आर्य पुरुषों में महर्षि का एक ऐसा स्मारक बनाने का विचार किया जो महर्षि के कार्यों की रक्षा के साथ-साथ विस्तार करने वाला भी हो विचारान्तर डी.ए.वी. स्कूल खोलने का निश्चय किया गया। समस्या धन की इतनी नहीं थी जितनी अध्यापन कार्य करने की थी। युवक हंसराज बी.ए. कर चुका था। अपने आचार्य के अधूरे कार्यों को पूरा करने की इसके मन में तड़प थी। उसने यहां तो अपनी भावना को प्रकट नही किया परन्तु अपने अंग्रेज भ्रता मुल्खराज को अपने मन की सब बात बतला कर उनसे आशीर्वाद चाहा। लाला मुल्खराज ने अपने छोटे भाई को त्याग और बलिदान के मार्ग पर अग्रसर होते देख, स्वयं को भी उसी राह का राही बना लिया। उन्होंने कहा कि जब तक तुम स्कूल की निष्काम सेवा करना चाहो, तब तक करो। मैं अपने मासिक वेतन ८० रूपयों का आधा भाग तुमको देता रहूँगा और उसने अनेक तकलीफों व कष्टों को सहन करते हुए जीवन भर अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को अपना आधा वेतन देते रहे। यह था मुल्खराज का अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को महान् बनाने में सहयोग।

इस प्रकार इन तीनों दृष्टान्तों में शिवा जी की माता जीजाबाई का, स्वामी श्रद्धानन्द की धर्मपत्नी शिवादेवी का तथा महात्मा हंसराज के बड़े भाई लाला मुल्खराज का इन तीनों को महान् बनाने में बड़ा सहयोग रहा। इन तीनों को किसी भी सच्चे भारतीय को भूलना नहीं चाहिए।

द्वारा-गोविन्दराम आर्य एण्ड संस
१८० महात्मागान्धी रोड,
दो तल्ला, कोलकाता

श्री सोमेन्द्र शास्त्री ने विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित जू.रिसर्च परीक्षा उत्तीर्ण की

गुरु द्रोणाचार्य की तपस्यास्थली एकलव्य की साधना स्थली कौरव पाण्डवों की परीक्षा स्थली पूठ में स्थापित महर्षि दयानन्द सरस्वती महाविद्यालय पूठ के स्नातक सोमेन्द्र शास्त्री ने विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित जूनियर रिसर्च फेलोशिप परीक्षा उत्तीर्ण कर गुरूकुल पूठ का नाम उज्जवल किया है। यू.जी.सी. की परीक्षा में लगातार सफलता का क्रम रखते हुए सोमेन्द्र शास्त्री ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का परचम फहराया है।

सोमेन्द्र शास्त्री अपनी सफलता (आचार्य धर्मपाल जी पूर्व) स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती महाराज संचालक गुरुकुल पूठ के श्रीचरणों में अर्पित करते हुए कहा कि आज जो कुछ भी हूँ वह गुरु जी के आशीर्वाद का प्रभाव है। स्वामी जी ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। आर्य मित्र परिवार की ओर से भी उन्हें बधाई।

आस्तिकता और बुद्धि की शुद्धता के लिये गायत्री मंत्र का करे अनुष्ठान

पं० विमल किशोर आर्य ''वैदिक प्रवक्ता''

मानव जीवन को सुखी बनाने के लिये दो बातों की सबसे अधिक आवश्यकता है प्रथम अस्तिकता दूसरे बुद्धि की शुद्धता ये दो कार्य गायत्री मंत्र से सिद्ध होते है। गायत्री मंत्र चारो वेदों में कई बार आया है - ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो योनः प्रचोदयात। (यजु० अ० ३६ मंत्र ३)

इस मंत्र का ऋषि विश्वामित्र, देवता सविता, छन्द गायत्री है। गायत्री मंत्र के तीन भाग है जिसे महाव्याहृति कहते है - (१) ओ३म् भूर्भुवः स्वः। जिसमें परमात्मा के स्वरूप का वर्णन किया गया कि वह परमात्मा सत चित आनन्द स्वरूप है।

(२) तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। परमात्मा के आनन्द को प्राप्त करने के लिये उसके तेज या ज्योति को अर्न्तआत्मा में धारण करना। बुद्धि की शुद्धि के लिये अस्तित्व ईश्वर विश्वास और ईश्वर की सर्वव्यापकता का ज्ञान चाहिये मंत्र का दूसरा भाग अस्तिकता और आत्मिक शक्ति को पैदा करता है। मंत्र के तीसरे भाग में धियो योनः प्रचोदपात। जिसका फल बताया गया कि परमात्मा रूपी मणि हृदय में धारण करके उसका प्रकाश बुद्धि को पवित्र एवं शुद्ध करती। बुद्धि स्वं श्रेष्ठ मार्ग पर चलने लगती है।

गायत्री मंत्र का सर्वप्रथम ओ३म् आता है यह परमात्मा का निज नाम है जिस प्रकार किसी व्यक्ति का गुण कर्म स्वभाव और पदिक तथा निज नाम होता है जैसे किसी एक व्यक्ति को महात्मा बापू गांधी, राष्ट्रपिता, सावरमती का संत पुकारते है परन्तु निज नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी है ठीक इसी प्रकार गुण कर्म स्वभावनुसार परमात्मा के असंख्य नाम है।

गायत्री मंत्र का चिन्तन करने वाले को सर्वप्रथम इस सच्चाई का हृदयंग्न करना होगा कि बहुदेवतावाद की मान्यता अशुद्ध है ईश्वर एक है एक सद्विप्रा बहुदा वदन्ति उस एक परमात्मा को ही विद्वान गुण कर्म स्वभावनुसार असंख्य नामों से पुकारते है। इस प्रकार सभी वेद शास्त्र एक स्वर से एक मात्र ओ३म् की उपासना प्रणव (ओंकार) जाप का विधान करते हैं।

गायत्री मंत्र के द्वारा ईश्वर की उपासना में बताया गया है कि वह परमात्मा सतचित आनन्द स्वरूप है जीव सत है जो कभी नष्ट नही होता और चित जो चेतना स्वरूप है। प्रकृति सत् है अर्थात सत्ता वाली तो है पर चेतना का अभाव है जीव में आनन्द का अभाव होने से वह भटकता फिरता रहता है। परमात्मा के आनन्द को जीव उपासना को द्वारा प्राप्त कर सकता। ईश्वर को प्यार करना ईश्वरोपासना है और प्रकृति को प्यार करना प्रकृति उपासना है आज का मनुष्य प्रकृति उपासक होने से दुःखी है। परन्तु प्रकृति को मिथ्या या स्वप्न कहना व्यर्थ है प्रकृति साधन है साध्य नहीं। पहले उस पर सवार होकर और अन्त में छोड़कर जीव परमात्मा को पा सकेगा। जैसे नाव साधन है निरन्तर नाव पर बैठे रहे तो कभी नदी पार नहीं कर सकता। इस प्रकार त्रेतवाद के विवेचन द्वारा प्रकृति को साधन बताकर मानव जीवन का उद्देश्य प्राप्ति स्थिर करना यही गायत्री का सन्देश है।

गायत्री मंत्र में सवितु शब्द आता है जो कि जगत उत्पादक का संकेत मिलता है परमात्मा संसार का उत्पादक है। परमात्मा पांच कार्य विशेष रूप से करता है (१) सृष्टि की उत्पत्ति, (२) सृष्टि का पालन, (३) सृष्टि का संहार (४) मनुष्यों के द्वारा किये गये कर्मो का फल देना (५) वेदज्ञान देना। गायत्री मंत्र का ध्यान अर्थात चिन्तन करने का तात्पर्य है कि हम ईश्वर के गुणों को धारण करे मंत्र में कहा भी गया है भर्गः देवस्य धीमहि उस वरणीय देव शुद्ध तेज को हम धारण करें। जैसे परमात्मा न्यायकारी है हम भी न्याय का संकल्प ले। परमात्मा पवित्र है। हम भी अपनी इन्द्रियों को पवित्र रखे परमात्मा हिंसा नहीं करता हमें भी हिंसा से दूर रहना चाहिये।

परमात्मा के गुणों को हम तभी ग्रहण कर सकते है जब हम अपनों बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ले चलें। गायत्री मंत्र के द्वारा परमात्मा कहता है धियो योनः प्रचोदयात हमारी बुद्धि सन्मार्ग पर चलती रहे बुद्धि की निर्बलता में मेधा बुद्धि की प्राप्ति में मानव जीवन की सफलता का रहस्य दिया है। मनुष्य को पशु आदि योनियों से पृथक करने वाला तत्व बुद्धि है। बुद्धि की पवित्रता ज्ञान की निर्मलता एवं शुद्धता ईश्वरोपासना द्वारा सम्भव है।

यहाँ ध्यान देने की आवश्यकता है गायत्री मंत्र का ध्यान चिन्तन किया जाता है। जप ओ३म् का किया जाता है। गायत्री अनुष्ठान का अर्थ गायत्री के एक एक पद में निहित ईश्वरीय सन्देश का ध्यान (चिन्तन) करना और उस दिव्य सन्देश की व्यवहारिक जीवन में कार्यान्वित करने से है। गायत्री मंत्र के अतिरिक्त वेद के प्रत्येक मंत्र को अपने व्यवहार में उतारना चाहिये प्रत्येक मंत्रो पर चिन्तन मनन करना चाहिये और जंप मन की एकाग्रता के लिये किया जाता है उसके लिये अर्थ विचार पूर्वक ऑकार जप का विधान गायत्री अनुष्ठान चिन्तन की प्रक्रिया यह है कि परमपिता परमात्मा को भलीभांति जानने के लिये आप एकान्त शान्त स्थान में सुखासन में बैठकर प्रथक अर्थ विचार पूर्वक प्रभाव जाप (ऑकार जप। द्वारा मन की एकाग्रता सम्पादित की जाये तत्पश्चात यहां मंत्र गायत्री की एक-एक पद की सन्निहित दिव्य वैदिक सन्देशों की गहराई में उतरिये। आप शक्ति के स्त्रोत प्रभु के समीप ही नहीं उस विश्वधात्री माँ की गोद में बैठे हैं और तब आत्मबल युक्त होकर गायत्री के एक-एक पद में गुंथी हुई दिव्य भावना में और अपने व्यवहारिक जीवन के उतारने का सत्य संकल्प कीजिये स्वाध्याय में गायत्री की एक-एक पद में वेद को देखिये और वेद की पावन ऋचाओं में गायत्री में आत्म विभोर है। आप ऐसा बार-बार कीजिये। जितनी गहराई डुबकी आप लगा सकेगे उतने ही उज्ज्वल रत्न पा सकेगे। यही गायत्री का सच्चा अनुष्ठान है यही सच्ची साधना है।

-विरामखण्ड गोमती नगर
लखनऊ
चलभाष-०७४६६६६८२६४

पृष्ठ.४ का शेष भाग...

स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया। यहीं से उनके राष्ट्रीय जीवन संघर्ष का श्रीगणेश हुआ क्योंकि आगे चलकर उन्हें तो स्वयं अपने साहसिक बलिदान द्वारा देश के नौजवानों को देशभक्ति का पाठ जो पढ़ाना था।

सन् १९२१ में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन की लहरों में बनारस के अन्य छात्रों के साथ साथ संस्कृत के छात्र पन्द्रह वर्षीय बालक चन्द्रशेखर तिवारी भी सम्मिलित हो गए। सबके साथ उन्हें भी गिरफ्तार कर पारसी मजिस्ट्रेट खरेघाट के सम्मुख पेश किय गया। अन्य छात्रों इनमें विख्यात क्रांतिकारी श्री मनमथ नाथ गुप्त भी एक थे ने एक रटा रटाया बयान दिया- ''जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड और खिलाफत के अन्याय के विरोध में मैं इस अदालत को स्वीकार नहीं करता और इससे असहयोग करता हूँ।'' परंतु बालक चन्द्रशेखर का नम्बर आने पर उसके उत्तर ने सभी को हतप्रभ कर दिया। मजिस्ट्रेट ने पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है?उत्तर था आजाद, मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा- तुम्हारे पिता का क्या नाम है?उत्तर था स्वाधीन, मजिस्ट्रेट का तीसरा प्रश्न था- तुम्हारा घर कहां है?उत्तर था- जेलखाना।

मजिस्ट्रेट खरेघाट ने इन उत्तरों से बौखला कर चन्द्रशेखर को जो अब चन्द्रशेखर आजाद हो चुके थे को पन्द्रह बेंतों की सजा सुना दी। बालक चन्द्रशेखर आजाद प्रत्येक बैंत पर भारत माता की जय, वन्दे मातरम् व महात्मा गांधी की जय का उद्घोष करने के साथ अपने अद्भुत साहस का परिचय देकर युवा हृदय सम्राट बने। जेल से बाहर आने पर बनारस के नागरिकों ने ज्ञानव्यापी में उनका जोरदार स्वागत किया। यह घटना आजाद के क्रांतिकारी रूझान का प्रथम संकेत थी। कदाचित यही उनके जीवन की पहली और अंतिम गिरफ्तारी थी।

उनका सारा जीवन ही क्रांतिकारी घटनाओं से भरा पड़ा है जिला पीलीभीत के गांवों बमरौली व बिचपुरी में एक्शन, काकोरी ट्रेन डकैती एक्शन, लाहौर का साण्डर्स वध, दिल्ली का असेम्बली बम काण्ड एवं दिल्ली का ही गाडोदिया स्टोर एक्शन यानी सन् १९२४ से १९३७ के बीच उत्तरी भारत विशेष रूप से यू.पी. व पंजाब में घटित लगभग सभी प्रमुख क्रांतिकारी घटनाओं में आजाद ने क्रांतिकारी दल के एक महत्वपूर्ण सदस्य व नेता के रूप में भाग लेकर यह साबित कर दिया कि वह वास्तव में जन्म से तो ब्राह्मण थे परंतु कर्म से क्षत्रिय।

विप्लवी महानायक रास बिहारी बोस के जापान चले जाने के बाद आजाद ही ऐसे क्रांतिकारी के रूप में उभरे जिन्हें प्रत्येक एक्शन में ले चलने की सभी क्रांतिकारियों की प्रबल इच्छा रहती थी।

काकोरी केस के अन्तर्गत दल के लगभग सभी प्रमुख क्रांतिकारियों के जेल जाने के बाद आजाद ही पुनः संगठित क्रांतिकारी दल के नेता चुने गए जिसमें सरदार भगत सिंह जैसे महान क्रांतिकारी भी प्रमुख सदस्य के रूप में सक्रिय रहे। सभी क्रांतिकारी आजाद को यथाशक्ति सुरक्षित भी रखना चाहते थे। सबका सदा यही प्रयत्न रहता था कि छोटे मोटे काम उन्हें जोखिम में डाले बिना ही हो जाये। परंतु आजाद को यह चिन्ता रहती थी कि उनकी अनुपस्थित में उनके अन्य साथी कहीं संकट में न पड़ जाये। इसलिए वे सदा साथ रहते थे।

आजाद स्वयं अनुशासन प्रिय थे और इसके लिए दल के अन्य सदस्यों को भी प्रेरित करते थे। उन्होंने दल के निर्णय का कभी उल्लंघन नही किया। दल के नेता के चाहे वह शचीन्द नाथ सान्याल अथवा राम प्रसाद बिस्मिल ही क्यों न हो किसी के भी आदेश का पालन करने में न वे कभी हिचकिचाये और न ही कभी उनकी अवहेलना की। वे न तो कभी विपत्ति की चिन्ता करते और न कभी संकट में अपना मानसिक संतुलन ही खोते थे उनमें सिंह की निर्भीकता और अभूतपूर्व साहस था।

अपने लम्बे क्रांतिकारी संघर्षों में ब्रिटिश साम्राज्य को हिला कर रख देने वाला भारत मां का यह सपूत अन्ततः अल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में ब्रिटिश पुलिस से संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

इतिहासकारों का कहना है कि क्रांतिकारियों का औसत जीवन सिया उनके जो देश से बाहर निकल जाते थे दो साल का होता रहा है परंतु फरार होने के बावजूद देश में ही रह कर खतरनाक से खतरनाक काम करते हुए भी शहीद शिरोमणि चन्द्र शेखर आजाद का क्रांतिकारी जीवन लगभग दस साल का रहा। शायद यही कारण रहा कि भारत के क्रांतिकारी शहीदों पर बंगाल में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ ''द रोल आफ आनर'' में इन्हें ''हीरो आफ हन्ड्रेड फाइट्स'' से नवाजा गया।

ऐसे महान क्रांतिकारी की पावन स्मृति में कोटिशः नमन्।

''रक्त बिंदु माथे लगा, क्रांति मंत्र कर जाप।
बासंती चोला पहन सदा रहे निष्पाप।।
प्राण दिये रणभूमि में मातृभूमि का कर ध्यान।
जो तुमने अर्पित किया सर्वश्रेष्ठ है दान।।

मो.- ६४५५४९०७९८

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में
....
....
....

मानवता (अनुकरणीय प्रसंग)

सितम्बर २०१० की बात है ३५ वर्षीय विष्णु श्रेष्ठ जो कि गोरखा रेजिमेन्ट में कार्य कर रहे थे, अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् अपने घर नेपाल वापस जाने के लिए गोरखपुर के लिए मौर्य एक्सप्रेस में सवार थे। बीच रास्ते में कोई पन्द्रह बीस डाकुओं ने रेल पर चितरंजन (पश्चिम बंगाल) स्टेशन के पास आक्रमण किया और यात्रियों से लूटपाट आरम्भ कर दी तथा मोबाइल, लेपटॉप, आभूषण तथा नगदी लूटते गए। जब ये डाकू श्रेष्ठ के पास पहुँचे तो श्रेष्ठ ने भी अपनी जेब से सारा सामान निकाल कर इनको देना चाहा। इसी बीच में उनके सामने की सीट पर एक १८ वर्ष की लड़की बैठी थी जिसे इन डाकुओं ने बलात्कार के उद्देश्य से उठा लिया। लड़की पहले से विष्णु श्रेष्ठ को नहीं जानती थी पर बातचीत में उसे इतना पता अवश्य लग गया था कि यह एक अवकाश प्राप्त सैन्य अधिकारी है। उसने बचाने की गुहार लगाई तो विष्णु श्रेष्ठ अपने को रोक नहीं सका। यद्यपि डाकुओं की संख्या बीस से भी कहीं ज्यादा थी उनमें से कुछ के पास घातक हथियार यहाँ तक पिस्तौले भी थी परन्तु श्रेष्ठ ने इन सबकी परवाह नहीं कर अपनी खुखरी निकाल ली और डाकुओं पर टूट पड़ा। डाकुओं ने कल्पना भी नहीं की थी कि एक व्यक्ति इस प्रकार उन पर टूट पड़ेगा। इस लड़ाई का यह नतीजा हुआ कि तीन चार डाकू मर गए और आठ घायल हो गए बाकी के सारा सामान वहीं छोड़कर भाग गए और इस प्रकार अपनी जान हथेली पर रखकर श्रेष्ठ ने अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। जब उस लड़की के परिवार ने श्रेष्ठ को पुरस्कारस्वरूप बड़ी राशि देनी चाही तो उसने कहा कि मैंने केवल मनुष्य होने के नाते अपने कर्तव्य का पालन किया। ऐसी घटनाएँ वस्तुतः मनुष्यता में आज भी विश्वास को जागृत करती हैं।

संकलनकर्ता-डॉ० धीरज सिंह,
कोषाध्यक्ष सभा

झज्जर (हरियाणा) में स्वामी शक्ति जन्मदिवस

वैदिक सत्संग मण्डल व यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में आर्य जगत के महान सन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी महाराज का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से गांव कलोई से मनाया गया। जिसमें यज्ञ ब्रह्मत सूबेदार भरतसिंह, यजमान विवेक कुमार रहे। इस अवसर पर बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम कि अध्यक्षता आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ थे और मुख्य वक्ता योगाचार्य रमेश आर्य थे। आचार्य मैत्रेय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जो व्यक्ति कथनी और करनी में एकरूपता रखता है और कठिनाईयों से घबराता नहीं है वही महान बनता है। स्वामी शक्तिवेश जी एक झुझारू कर्मठ व निडर व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने थोड़े समय में भी आर्य समाज का बहुत काम किया है। जिन्हें हमेशा याद किया जाएगा। मण्डल अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र कौशिक ने कहा हमें कन्या भ्रूण हवा को अभिशाप मानकर इसका विरोध करना चाहिए और सृष्टि के विस्तार में रुकावट नहीं डालनी चाहिए।

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ

गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ.प्र.)

प्रवेशार्थ सूचना

गंगा किनारे शान्त प्रकृति के वातावरण में स्थित गुरूकुल पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। सं.वि.वि. वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक मान्यता प्राप्त एवं उ.प्र. मा.शि. परिषद लखनऊ से मध्यमा (१२) तक मान्यता प्राप्त तथा सुन्दर दिनचर्या धनुर्विद्या का विशेष प्रशिक्षपण योगासन प्राणायाम आर्यवीरदल का व्यायाम प्रशिक्षण अनिवार्य रूप में प्रदान किया जाता है। प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा की भी सुन्दर व्यवस्था है। अपने बच्चों को देश भक्त गुरू भक्त, मातृ-पितृ भक्त बनाने के लिए आज ही संकल्प लेकर शीघ्र सम्पर्क करें स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज की साधना स्थली पर आपका हार्दिक स्वागत है।

दिनेश आचार्य	धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	राजीव आचार्य
कार्यालयाध्यक्ष	संचालक	प्राचार्य
दूरभाष-०५२२-२२८६३२८	मो. ६८३७४०२१६२	मो. ६८३७४०२१६२

ग्रीष्म वर्णन

व्याकुल है त्रिभुवन सकल पाकर आतप ताप।
सुधां वृष्टि करके प्रभों, हरो ग्रीष्म संताप।।

कवित्त

बसन्त की बहार का तो तत्क्षण अन्त हुआ
ग्रीष्म ताप से ताड़ित भागी हरियाली है।
शुष्क हुए फूल सब खुश्क हुए वृक्ष मूल
पुष्प से विहीन हुई झूल रही डाली है।
सुगन्ध समीर नहीं शीतल है नीर नहीं
मैं नीचे क्षीर नहीं आपदा निराली है।
गति की विहीनता का दृश्य यहां देखो चन्द्र
द्वाय हरे बाग में ही आग देत माली है।

सवैया

जित वायु बहे सुखदायक थी उत आज हुई प्रतिकूल वही।
शुभ शान्त खमण्डल था तब जो उड़ आज वहीं अति धूल रही।।
हँसते खिलते प्रिय पुष्प जहां अब दीख रहे अरि शूल वहीं।
नभ तो तपता अति तेज अहो हुई सूरल के अनुकूल यही।।

कवित्त

दैत्यराज आदित्य के त्रास से त्रसित हुई
आवत है ऊषा भागी भगिनी प्रभात की।
विराट के ही राज में ग्रीष्म बनवास में
द्रोपदी है त्रास में भारी कीचक लात की।
मच रहा चहुँ ओर त्राहि त्राहि का है शोर
विपद है अति घोर हाय दिन रात की।
ग्रीष्म की गरमी में पार न बसाती 'चन्द्र'
आती है याद गत बसन्त, बरसात की।।

सवैया

धर रूप भयंकर ग्रीष्म ने सब नष्ट करी सुषमा जग की।
तप तेज दिवाकर ने अब मन्द करी गति तीव्र नदी नद की।।
नभ में अविराम विभाकर चाल चले, गजराज महा मद की।
लघु देख अरे किमि छवि लाई द्युति "चन्द" सदा सुखदायक की।।

कवित्त

संकट अनेक छाये विकट ये दिन आये
आते ही निकट हाय इस ग्रीष्म मास के।
पक्षी अकुलाय, वृक्ष मुरझाय गये
दिये हैं सुखाय सभी ताल आस पास के।
पशुओं को चारा नहीं, दीनों का सहारा यही
दरशन होते नहीं कहीं हरी घास के
रात प्रातः सायं की विपद तो कही ना जात
दुर्दिन में बीतत है सम अर्ध-मास के।।

सवैया

हरे बन बाग उजाड़ दिये अब मोर बसे किन बागन में।
भरे सब ताल सुखाय दिये बक हंस चरें किन कानन में।।
संहार करे जिस ओर चले, विष, घोर भरा इस नागन में।
और अब होली फुँके रब की सब की फुँकती दिन फागन में।।

वेद प्रकाश शास्त्री
व्याकरणाचार्य

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।